Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 1

– Save This Page as a PDF–

pdf डाउनलोड कारे

जब आप प्रार्थना करते हैं,

अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा बंद कर लो

मत्ती ६:५-१५

खोदाई: पाखंड कैसा दिखता है? इसकी प्रेरणा क्या है? इसका इनाम? यह जरूरतमंदों के प्रति सच्ची करुणा से कैसे भिन्न है? फरीसियों और टोरा-शिक्षकों का पाखंड उनकी प्रार्थना को कैसे प्रभावित करता है? उनका प्रतिफल उन लोगों से किस प्रकार भिन्न है जो ईमानदारी से प्रार्थना करते हैं? वचन ६ के अनुसार चिंता की औषधि और शांति का रहस्य क्या है? येशुआ की आदर्श प्रार्थना में, उसने सबसे पहले ईश्वर से संबंधित किन तीन चिंताओं के बारे में प्रार्थना की? कौन सी व्यक्तिगत चिंताएँ अनुसरण करती हैं? क्षमा और प्रार्थना के बीच क्या संबंध है?

चिंतन: यह आपको यह जानने में कैसे मदद करता है कि परमेश्वर शांत रहते हैं और तनावग्रस्त नहीं होते? कि उसे शालोम का परमेश्वर कहा जाता है? आप किस चीज़ को लेकर सबसे ज़्यादा तनाव महसूस करते हैं, अपने दिमाग़ से या अपने दिल से? वचन ६सी में आप क्या सोचते हैं कि शालोम आपके हृदय की रक्षा कैसे करता है? चूँकि प्रभु अपने वादों को निभाने में भरोसेमंद हैं, तो आज आपको अपने जीवन के लिए किस वादे की आवश्यकता है? यदि हमारा पिता हमारे मांगने से पहले ही जानता है कि हमें क्या चाहिए, तो प्रार्थना क्यों करें?

मेशियाक की सच्ची धार्मिकता के आठवें उदाहरण में, जब हम प्रार्थना करते हैं तो वह हमें एक मॉडल देता है। यह हमें फरीसियों और टोरा-शिक्षकों की प्रार्थना के पाखंड के विपरीत प्रभावी पूजा के लिए वांछित महत्वपूर्ण विषयों और सिद्धांतों को दिखाता है।

उच्च पवित्र दिनों के दौरान, यहूदी तशुवा (या पश्चाताप) चाहते हैं; तफ़िला (या प्रार्थना); और तज़ेदकाह (या दान), निर्णय को टालने के लिए। यहूदी परंपरा में, व्यक्ति सुबह, दोपहर और शाम को प्रार्थना करने के लिए बाध्य है। उस समय कुलपतियों ने प्रार्थना की और हम दानिय्येल ६:१० में एक समान पैटर्न देखते हैं। स्वयं एक पारंपरिक यहूदी के रूप में, मेशियाच का मानना था कि उनके अनुयायी भी वैसा ही व्यवहार करेंगे।

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 2

यहूदियों का मानना है कि प्रार्थना का अर्थ प्रभु को यह बताने से अधिक है कि आप क्या चाहते हैं, उनकी बात सुनें। यह एकालाप नहीं, बल्कि संवाद है। और शब्द तफ़िला, या प्रार्थना, न्याय करने के लिए हिब्रू से आया है। यह तफ़िला शब्द से लिया गया है, जिसका अर्थ है स्वयं का मूल्यांकन करना। ये शब्द यहूदी प्रार्थना के उद्देश्य में अंतर्दृष्टि प्रदान करते हैं, जो यह सुनिश्चित करता है कि आपकी इच्छा ईश्वर की इच्छा के अनुरूप है। प्रार्थना ऐसी चीज़ नहीं होनी चाहिए जो सप्ताह में एक बार होती हो। यह रोजमर्रा की जिंदगी का अहम हिस्सा होना चाहिए।’ वास्तव में, सबसे महत्वपूर्ण प्रार्थनाओं में से एक, बिरकत हा-मज़ोन, आराधनालय सेवाओं में कभी नहीं पढ़ी जाती है। भेड़ें गिनने के बजाय हमें चरवाहे की बात सुननी चाहिए!

प्रार्थना के लिए यहूदी मानसिकता को कवनाह कहा जाता है, जिसका अनुवाद आम तौर पर “एकाग्रता” या “इरादा” के रूप में किया जाता है। क्वेकर आस्था के लोग इसे “केंद्रीकरण-नीचे” कहते हैं। कवनाह का न्यूनतम स्तर यह जागरूकता है कि व्यक्ति ईश्वर से बात कर रहा है और प्रार्थना करने के दायित्व को पूरा करने का इरादा है। यदि आपके पास कवनः का न्यूनतम स्तर नहीं है, तो आप प्रार्थना नहीं कर रहे हैं – बल्कि केवल पढ़ रहे हैं। इतना ही नहीं, यह बेहतर है कि आपका दिमाग अन्य विचारों से मुक्त हो, आप जानते हों और समझते हों कि आप किस बारे में प्रार्थना कर रहे हैं और आप प्रार्थना के अर्थ के बारे में सोचते हैं।

तल्मूड में कहा गया है कि किसी भी भाषा में प्रार्थना करना स्वीकार्य है जिसे आप समझ सकते हैं; हालाँकि, पारंपरिक यहूदी धर्म ने हमेशा हिब्रू में प्रार्थना करने के महत्व पर जोर दिया है। एक पारंपरिक हसीदिक कहानी एक अशिक्षित यहूदी की प्रार्थना के बारे में स्पष्ट रूप से बताती है जो प्रार्थना करना चाहता था लेकिन हिब्रू नहीं बोलता था। वह आदमी केवल वही हिब्रू बोलना शुरू कर दिया जो वह जानता था – वर्णमाला। उसने इसे बार-बार सुनाया, जब तक कि एक रब्बी ने उससे नहीं पूछा कि वह क्या कर रहा है। उस आदमी ने रब्बी से कहा, “पवित्र व्यक्ति, धन्य है वह, जानता है कि मेरे दिल में क्या है। मैं उसे पत्र दूँगा, और वह शब्दों को एक साथ जोड़ देगा।”

तफ़िला के प्रति दृष्टिकोण की एक अद्भुत परिभाषा यह है कि यह यहोवा की सेवा करने का एक तरीका है। इसे हृदय की सेवा कहा जाता है (ट्रैक्टेट टैनिट २बी)। हालाँकि, प्रभु की चेतावनी उन लोगों के खिलाफ है जो पाखंडी तरीके से प्रार्थना करेंगे। उन्होंने कहा: और जब तुम प्रार्थना करो. . . यदि आप प्रार्थना करते हैं तो नहीं, बल्कि जब आप प्रार्थना करते हैं। . . कपटियों के समान मत बनो, क्योंकि दूसरों को दिखाने के लिये सभाओं में और सड़कों के मोड़ों पर खड़े होकर प्रार्थना करना उन्हें अच्छा लगता है। मैं तुम से सच कहता हूं, उन्होंने अपना प्रतिफल पूरा पा लिया है (मत्ती ६:५)। प्रार्थना आपके वक्तृत्व कौशल को दिखाने का अवसर नहीं होना चाहिए, फरीसियों ने सार्वजनिक रूप से प्रार्थना की ताकि हर कोई देख सके कि वे

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 3

कितने “आध्यात्मिक” थे। यीशु गुप्त रूप से प्रार्थना करने को कहते हैं।



आपकी प्रार्थनाओं का सार्वजनिक तमाशा बनाने के बजाय,
येशुआ एक बेहतर विकल्प प्रदान करता है: लेकिन जब आप प्रार्थना करते हैं, तो अपने कमरे में जाएं, दरवाजा बंद करें और अपने पिता से प्रार्थना करें, जो अदृश्य है (मत्ती ६: ६ ए)। लेकिन पिता के अदृश्य होने का मतलब यह नहीं है कि जब हम सार्वजनिक रूप से, या अपने परिवारों या विश्वासियों के अन्य छोटे समूहों के साथ प्रार्थना करते हैं तो वह मौजूद नहीं होते हैं। जब भी और जहां भी उनके बच्चे उन्हें बुलाते हैं, वह हमेशा मौजूद रहते हैं। सच्ची प्रार्थना हमेशा अंतरंग होती है – सार्वजनिक रूप से भी। भले ही हम जो कहते हैं उसे पूरी दुनिया सुनती है, फिर भी ईश्वर पर एक अंतरंगता और ध्यान केंद्रित होता है जो अप्रभावित रहता है। प्रभु निकट है. किसी बात की चिंता मत करो; इसके विपरीत, प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी विनती परमेश्वर के सामने प्रकट करो। तब परमेश्वर का उपदेश, जो सारी समझ से परे है, आपके हृदयों और मनों को मसीहा येशुआ के साथ एकता में सुरक्षित रखेगा (फिलिप्पियों ४:५ बी-७)।

तब तुम्हारा पिता देखता है कि गुप्त में क्या किया जाता है (मत्ती ६:६बी)। यह अवधारणा तानाख में इस समझ को दर्शाती है कि उससे कुछ भी छिपा नहीं है (व्यवस्थाविवरण २९:२९; भजन संहिता ९०:८, १३९; यिर्मयाह २३:२४)। यहोवा देखता है कि गुप्त रूप से क्या किया जाता है, इस अर्थ में कि वह कभी विश्वास को धोखा नहीं देता है। हम अपने निजी प्रार्थना उद्यान में प्रभु के साथ जो बहुत सी चीजें साझा करते हैं, वे केवल उसके और उसके लिए ही होती हैं। हम अपने सबसे प्रिय प्रियजनों या निकटतम मित्रों के साथ भी जो विश्वास साझा करते हैं, वह कभी-कभी धोखा खा सकता है। लेकिन हम निश्चिंत हो सकते हैं कि यहोवा के साथ हमारे रहस्य हमेशा सुरक्षित रहेंगे, और शुद्ध हृदय से गुप्त रूप से प्रार्थना करने वाले एक आस्तिक पर पिता का पूरा ध्यान रहता है।

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 4

इतना ही नहीं, जब तुम्हारी प्रार्थना सच्ची होगी, तो हमारा पिता जो गुप्त कामों को देखता है, तुम्हें प्रतिफल देगा (मत्ती ६:६सी)। वह जो सबसे महत्वपूर्ण रहस्य देखता है वह हमारे द्वारा कहे गए शब्द नहीं बल्कि हमारे दिल में मौजूद विचार हैं। जब हमारे पास वास्तव में एक का श्रोता होगा, तो हमें वह पुरस्कार मिलेगा जो केवल वही दे सकता है। पवित्र आत्मा हमें इस पद में कोई अंदाज़ा नहीं देता कि प्रभु का प्रतिफल क्या होगा। महत्वपूर्ण सच्चाई यह है कि वह उन लोगों को ईमानदारी से आशीर्वाद देगा जो ईमानदारी से उसके पास आते हैं। बिना किसी प्रश्न के, ईश्वर तुम्हें पुरस्कार देगा।

और जब तू प्रार्थना करे, तो अन्यजातियों की नाईं बकबक न करना, क्योंकि वे समझते हैं कि उनके बहुत बोलने के कारण उनकी सुनी जाएगी। (मत्ती ६:७) प्रार्थना को बुतपरस्तों के बड़बड़ाने की तरह व्यर्थ दोहराव में मत बदलो। आज तक, यहूदी तात्कालिक प्रार्थना का अभ्यास नहीं करते हैं, बल्कि इसके बजाय प्रार्थना पुस्तकों का उपयोग करते हैं। रब्बी शिमोन ने कहा, “. . . जब आप प्रार्थना करते हैं, तो अपनी प्रार्थना को स्थिर [दोहरावदार, यांत्रिक] न बनाएं, बल्कि सर्वव्यापी के समक्ष दया और प्रार्थना की अपील करें, वह धन्य हो” (एवोट २:१३)। और गेमारा कहता है, “जब आप पवित्र को संबोधित करते हैं, तो वह धन्य है, आपके शब्द कम हों” (ब्राखोट ६१ए)। फिर, दोहराव, अपने आप में, जरूरी नहीं कि कोई समस्या हो। कई भजन, जो यहूदी प्रार्थना पुस्तक की नींव हैं, में दोहराव वाले विषय हैं। यीशु ने स्वयं गतसमनी के बगीचे में तीन बार प्रार्थना की कि मृत्यु का प्याला उससे हटा दिया जाए (मत्ती २६:३९:४४)। समस्या बार-बार की जाने वाली प्रार्थनाओं से नहीं है, बल्कि निरर्थक बड़बड़ाने से है, यह सोचना कि बुतपरस्त मंत्र से ईश्वर की ओर से प्रतिक्रिया मिलेगी।

यीशु हमें आदेश देते हैं: उनके जैसा मत बनो। उस प्रकार की प्रार्थना की कोई आवश्यकता नहीं है क्योंकि आपका पिता आपके मांगने से पहले ही जानता है कि आपको क्या चाहिए (मत्ती ६:८)। वह चाहता है कि हम उससे पूछें, वह हमें सुनना चाहता है, वह हमसे उससे कहीं अधिक संवाद करना चाहता है जितना हम उसके साथ संवाद करना चाहते हैं – क्योंकि हमारे प्रति उसका प्रेम उसके प्रति हमारे प्रेम से कहीं अधिक महान है। प्रार्थना ईश्वर का हमें अपने जीवन में उसकी शक्ति और प्रेम को प्रदर्शित करने का अवसर देने का तरीका है। भविष्यवक्ता यशायाह ने प्रभु के बारे में यह कहते हुए लिखा: इससे पहले कि वे पुकारें मैं उत्तर दूंगा; जब वे बोल ही रहे हों तो मैं सुनूंगा (यशायाह ६५:२४)। हम अपनी ज़रूरत के समय में उसकी ओर रुख कर सकते हैं।

टेक्सास के छोटे से शहर माउंट वर्नोन में, ड्रमंड बार ने अपना व्यवसाय बढ़ाने के लिए एक नई इमारत का निर्माण शुरू किया। स्थानीय बैपटिस्ट चर्च ने याचिकाओं और प्रार्थनाओं के साथ बार को खोलने से रोकने के लिए एक अभियान शुरू किया। काम खुलने से एक सप्ताह पहले तक ठीक से चल रहा था, तभी बार पर बिजली गिरी और वह जलकर

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 5

जमीन पर गिर गया। उसके बाद चर्च के लोग अपने दृष्टिकोण में आत्मसंतुष्ट थे, जब तक कि बार मालिक ने इस आधार पर चर्च पर मुकदमा नहीं कर दिया कि चर्च अंततः प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष माध्यमों से इमारत के विनाश के लिए जिम्मेदार था। चर्च ने अदालत को दिए अपने जवाब में इमारत के ढहने की किसी भी ज़िम्मेदारी या किसी भी तरह के संबंध से पूरी लगन से इनकार किया। जैसे ही मामला अदालत प्रणाली में पहुंचा, न्यायाधीश ने कागजी कार्रवाई पर गौर किया। सुनवाई के दौरान उन्होंने टिप्पणी की, “मुझे नहीं पता कि मैं इस मामले का फैसला कैसे करूंगा। लेकिन, ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे पास एक बार मालिक है जो प्रार्थना की शक्ति में विश्वास करता है, और एक पूरी चर्च मंडली है जो ऐसा नहीं करती है।” फिर भी, हमारी मानवीय असफलताओं के बावजूद, प्रार्थना चीज़ों को बदल देती है।

फिर हमें प्रार्थना का एक सुंदर उदाहरण दिया जाता है जिसे “प्रभु की प्रार्थना” के रूप में जाना जाता है, क्योंकि प्रभु यीशु ने इसे सिखाया था, लेकिन इसे अधिक सटीक रूप से “शिष्यों की प्रार्थना” के रूप में वर्णित किया जा सकता है। यह कितनी विडम्बना है कि कुछ समूहों ने इस आदर्श प्रार्थना का उपयोग उसी तरह किया है जिसके विरुद्ध मसीहा ने चेतावनी दी थी – व्यर्थ पुनरावृत्ति! इसका मतलब कोई जादुई मंत्र नहीं है, बल्कि प्रार्थना कैसे करें इसका एक मॉडल है।

तो फिर, आपको इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिए (मत्तीयाहु ६:९ए)। इसके सभी घटक मसीहा के समय के यहूदी धर्म में पाए जा सकते हैं, और यह अपनी सुंदरता और शब्दों की मितव्ययिता के लिए पूजनीय है। तो फिर, जब हम प्रार्थना करते हैं तो यह एक आदर्श है। यह हमें प्रभावी आराधना के लिए वांछित महत्वपूर्ण विषयों और सिद्धांतों को दिखाता है:

१. स्वर्ग में हमारे पिता या अविनु शबाशम्मायिम (मत्ती ६:९बी), कई हिब्रू प्रार्थनाएँ खोलते हैं। यहोवा के एक प्यारे पिता होने की अवधारणा यहूदी धर्म में कोई नई अवधारणा नहीं है। निर्गमन ४:२२ में इस्राएल को उसका पहलौठा पुत्र कहा गया, और यशायाह ने उसकी पीढ़ी के लिए घोषणा की: आप हमारे पिता हैं (यशायाह ६३:१६)। इसके अलावा, सिद्दुर में कई प्रार्थनाएँ परमेश्वर को अविनु के रूप में भी संबोधित करती हैं। इसलिए हमारी प्रार्थना, रुआच हा-हाकोडेश की शक्ति द्वारा, पुत्र के मंत्रालय के माध्यम से, पिता को संबोधित की जानी चाहिए (इफ २:१८)। हमारे पिता, इस्राएल के परमेश्वर, अभी भी हमारी प्रार्थनाओं का केंद्र बिंदु हैं। मत्ती की अगली दो पंक्तियाँ आराधनालय प्रार्थना के पहले भाग को याद दिलाती हैं जिसे कदीश के नाम से जाना जाता है।

२. आपका नाम पवित्र माना जाए (मत्ती ६:९सी)। आराधनालय में प्रसिद्ध कद्दीश का पाठ करते समय, नेता इन शब्दों के साथ शुरुआत करता है, “उसके महान नाम को बढ़ाया और पवित्र किया जाए” या यितगदल व्यितादश। तल्मूड का एक संपूर्ण ट्रैक्टेट प्रार्थना और आशीर्वाद (ट्रैक्टेट बेराखोट) कैसे अर्पित किया जाए, इसके विवरण

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 6

से संबंधित है। सामान्य सूत्र आज भी जारी है: बारुख अताह, यहोवा (आप धन्य हैं, प्रभु), हमें अन्य प्रार्थनाओं से पहले हाशेम को आशीर्वाद देने की याद दिलाते हैं। परमेश्वर के नाम का आदर करना उसका आदर करना है। मिस्रवासियों के कई अलग-अलग नामों से कई देवता थे। मूसा उसका नाम जानना चाहता था ताकि यहूदी लोगों को ठीक-ठीक पता चल जाए कि उसे उनके पास किसने भेजा है (एक्सोडस एट पर मेरी टिप्पणी देखें – आई एम हैज़ सेंड मी टू यू)। यहोवा ने स्वयं को आई ऍम कहा, एक ऐसा नाम जो उनकी शाश्वत शक्ति और अपरिवर्तनीय चरित्र का वर्णन करता है। उनका नाम उनके वादों की हस्ताक्षरित गारंटी की तरह है। ऐसी दुनिया में जहां मूल्य, नैतिकता और कानून लगातार बदलते रहते हैं, हम अपने अपरिवर्तनीय ईश्वर में स्थिरता और सुरक्षा पा सकते हैं। जो यहोवा मोशेह को दिखाई दिया वही परमेश्वर है जो आज हम में वास कर सकता है। इब्रानियों १३:८ कहता है: यीशु मसीह कल और आज और युगानुयुग एक सा है। क्योंकि हाशेम की प्रकृति स्थिर और भरोसेमंद है, हम उसका पता लगाने में अपना समय बर्बाद करने के बजाय उसका अनुसरण करने और उसका आनंद लेने के लिए स्वतंत्र हैं।

३. तेरा राज्य आये, तेरी इच्छा पूरी हो, जैसे स्वर्ग में होती है (मत्ती ६:१०)। यीशु ने अपने शिष्यों को आने वाले मसीहा साम्राज्य पर ध्यान केंद्रित करने का निर्देश दिया। हमें प्रार्थना करनी है कि हमारे जीवनकाल में ही पृथ्वी पर यही साम्राज्य स्थापित हो जाए। ग्रेट कद्दीश को जारी रखते हुए, नेता आगे कहते हैं, “। . . संसार में जिसे वह नये सिरे से रचेगा, जब वह मरे हुओं को जिलाएगा, और उन्हें अनन्त जीवन देगा, यरूशलेम नगर का पुनर्निर्माण करेगा, और उसके बीच में अपना मन्दिर स्थापित करेगा; और पृथ्वी से सभी बुतपरस्त पूजा को उखाड़ फेंकेगा, और सच्चे ईश्वर की पूजा को बहाल करेगा।’ टोरा सेवा की धर्मविधि भी इस पर विस्तार से बताती है और प्रथम इतिहास २९:११-१२ को उद्धृत करती है जब यह कहती है, “राज्य तुम्हारा है, प्रभु” सभी सच्चे विश्वासी चाहते हैं कि ईश्वर का मसीहा राज्य इस धरती पर आये क्योंकि इसका मतलब है कि येशुआ हा-मेशियाच वापस आ गया होगा। जब वह यरूशलेम से शासन करेगा और शासन करेगा (यशायाह Jg पर मेरी टिप्पणी देखें – धार्मिकता में आप स्थापित हो जाएंगे, आतंक दूर हो जाएगा), उसकी इच्छा पृथ्वी पर पूरी हो जाएगी क्योंकि यह वर्तमान में स्वर्ग में है।

४. आज हमें हमारी प्रतिदिन की रोटी दो (मत्ती ६:११)। जबकि हमारे लिए मसीहा साम्राज्य की बड़ी तस्वीर के लिए प्रार्थना करना आवश्यक है, मसीह हमें यह भी याद दिलाते हैं कि पिता हमारी दैनिक जरूरतों के बारे में भी चिंतित हैं। यह हमें याद दिलाता है कि चालीस वर्षों तक यहोवा ने अपने बच्चों की व्यावहारिक जरूरतों का ख्याल रखा। उदाहरण के लिए, मन्ना केवल उसी दिन खाने योग्य था जिस दिन इसे दिया गया था। इस्राएलियों ने भविष्य के बारे में बहुत अधिक चिंता किए बिना अपनी दैनिक रोटी के लिए प्रभु को धन्यवाद देना सीखा। जब हम भोजन से पहले प्रार्थना करते हैं, तो हमें यह याद दिलाने की आवश्यकता है कि हम भोजन को आशीर्वाद नहीं दे रहे हैं, बल्कि अपना भोजन उपलब्ध कराने के लिए प्रभु को आशीर्वाद दे रहे हैं!

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 7

५. हमने जो गलत किया है उसे क्षमा करो, जैसे हमने भी उन लोगों को क्षमा किया है जिन्होंने हमारे साथ अन्याय किया है (मत्ती ६:१२ सीजेबी)। मसीह की प्रार्थना हमें क्षमा मांगने का एक मजबूत कारण देती है। चूँकि हमने भी उन लोगों को माफ कर दिया है जिन्होंने हमारे साथ अन्याय किया है, हम भी उसी तरह की माफी मांग सकते हैं। कभी-कभी क्षमा पाने के लिए क्षमा करना आवश्यक होता है; कभी-कभी क्षमा करना आवश्यक होता है क्योंकि हमें पहले ही क्षमा किया जा चुका है, और कभी-कभी क्षमा करना आवश्यक होता है क्योंकि हम दूसरों द्वारा क्षमा किए जाने की प्रक्रिया में होते हैं। क्षमा देने और प्राप्त करने के ये सिद्धांत यहूदी धर्म में आम हैं।

प्रत्येक शबात पर, जो लोग इब्राहीम, इसहाक और जैकब के ईश्वर से प्रेम करते हैं, वे अमिदा का छठा आशीर्वाद, स्थायी प्रार्थना पढ़ते हैं, जो यहूदी धर्मविधि की केंद्रीय प्रार्थना है। यह सभी पापों के लिए क्षमा मांगता है और क्षमा के देवता के रूप में ईश्वर की स्तुति करता है। यह प्रार्थना, दूसरों के बीच, मसीहा यहूदियों के लिए सिद्दूर (२००९) में पाई जाती है। पारंपरिक यहूदी धर्म की केंद्रीय प्रार्थना के रूप में, अमिदा को अक्सर रब्बी साहित्य में तेफिला, “प्रार्थना” के रूप में नामित किया जाता है।

क्षमा की अवधारणा रोश हशनाह और योम किप्पुर के उच्च पवित्र दिनों का केंद्रीय विषय है। अविनु मल्केनु प्रार्थना हमें दूसरों को क्षमा करने के साथ-साथ क्षमा प्राप्त करने के लिए भी बुलाती है। हमें याद रखना चाहिए कि क्षमा केवल उन चीजों को भूलने से कहीं अधिक है जो हमने गलत किए हैं, या इस तथ्य को कि हमारे साथ अन्याय हुआ है। इसका आदर्श उदाहरण हमारे प्रति येशुआ के कार्य हैं। वह हमारे पापों को नहीं भूलता है, लेकिन एक बार जब हम उसके परिवार में अपना लिए जाते हैं तो वह उन पर ध्यान नहीं देना चाहता है (देखें Bw– विश्वास के क्षण में परमेश्वर हमारे लिए क्या करता है)। उसी तरह, उसकी संतान के रूप में, दूसरों के प्रति हमारी क्षमा सशर्त नहीं हो सकती। इसे रोश हशनाह (यहूदी नव वर्ष का पहला दिन) पर होने वाले एक विशेष समारोह में प्रदर्शित किया जाता है। पारंपरिक यहूदी किसी झील या समुद्र के पास जाते हैं और उसमें ब्रेडक्रंब या पत्थर फेंकते हैं। मीका ७:१९ सीजेबी के आधार पर इस समारोह को तश्लिख, या आप फेंक देंगे कहा जाता है, जहां पैगंबर कहते हैं: आप उनके सभी पापों को समुद्र की गहराई में फेंक देंगे। यदि परमेश्वर ने हमारे पापों को समुद्र की गहराई में दबा दिया है, तो अच्छा होगा कि हम उन्हें वहीं रहने दें और मछली पकड़ने न जाएँ!

प्रभु हमें तुरन्त क्षमा कर देता है (यशायाह ५५:७; प्रथम यूहन्ना १:९)। तो मुझे कब तक दोषी महसूस करना चाहिए? बहुत लंबा नहीं! वह मुझे बार-बार क्षमा करता है (नहेमायाह ९:१७; इब्रानियों ७:२५)। प्रभु ने मुझे स्वतंत्र रूप से क्षमा किया (रोमियों ३:२३-२४; इफिसियों २:८-९)। यह एक उपहार है। मैं इसके लिए भुगतान नहीं कर सकता. परमेश्वर ने मुझे पूरी तरह से माफ कर दिया है (कुलुस्सियों १:१४, २:१३-१४; रोमियों ३:२५; मत्ती २६:२८)। भजन ५१:१-१९ राजा डेविड द्वारा अपने जीवन में एक

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 8

विशेष रूप से पापपूर्ण घटना के बाद हाशेम के सामने लिखित स्वीकारोक्ति थी। दाऊद को बतशेबा के साथ अपने व्यभिचार और इसे छुपाने के लिए उसके पति ऊरिय्याह की हत्या करने पर सचमुच खेद था (दूसरा शमूएल ११:१-२७)। वह जानता था कि उसके कार्यों से कई लोगों को ठेस पहुंची है। परन्तु चूँकि दाऊद ने उन पापों से पश्चाताप किया, इसलिए प्रभु ने दया करके उसे क्षमा कर दिया। मोक्ष के लिए स्वयं परमेश्वर पवित्र आत्मा की अस्वीकृति को छोड़कर कोई भी पाप इतना बड़ा नहीं है कि उसे माफ नहीं किया जा सके! क्या आपको लगता है कि आप कभी भी प्रभु के करीब नहीं आ सकते क्योंकि आपने कुछ भयानक काम किया है? वह आपके किसी भी पाप को क्षमा कर सकता है और क्षमा करेगा।

६. और हमें परीक्षा में न ले आओ (मत्ती ६:१३क)। प्रलोभन शब्द से पहले कोई निश्चित उपवाक्य नहीं है। हालाँकि संज्ञा को निश्चित बनाने के लिए पूर्वसर्गीय वाक्यांश में लेख आवश्यक नहीं है, फिर भी यहाँ इसका लोप महत्वपूर्ण है। यह इंगित करता है कि इस शब्द का उपयोग आंतरिक प्रलोभनों को संदर्भित करने के लिए अधिक सामान्य अर्थ में किया जाता है। यीशु ने कहा: इस दुनिया में तुम्हें परेशानी होगी (योचनान १६:३३ बी), और इसमें कई मोड़ और मोड़ हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि हमारी परीक्षा ली जाएगी, फिर भी हमारे लिए यह प्रार्थना करना उचित है कि पिता हमें कठिन परीक्षा में न ले जाएँ (ग्रीक में प्रलोभन का अर्थ परीक्षा भी हो सकता है)। प्रभु किसी को पाप करने के लिए प्रलोभित नहीं करता (याकूब १:१३)। यह उनके स्वभाव के बिल्कुल विपरीत होगा। और हमारी इच्छा शक्ति को अतिरंजित किया गया है। हमारा पापी स्वभाव हमें जितना हम जाना चाहते हैं उससे कहीं आगे ले जाएगा और जितना हम चुकाना चाहेंगे उससे अधिक कीमत हमें चुकानी पड़ेगी। फिर भी, हमें प्रार्थना करने के लिए कहा जाता है कि हम कठिन परीक्षण न सहें, चाहे स्रोत कोई भी हो।

यीशु द्वारा कही गई प्रार्थना यहूदी रब्बी द्वारा सोची गई किसी भी प्रार्थना से बढ़कर थी। हमने जो गलत किया है उसे क्षमा करें, और हमें प्रलोभन में न डालें और रब्बियों की प्रार्थनाओं में कोई वास्तविक समकक्ष न खोजें। मंदिर में, लोगों ने कभी भी प्रार्थनाओं का जवाब “आमीन” के साथ नहीं दिया, बल्कि हमेशा इस आशीर्वाद के साथ दिया, “उनके राज्य की महिमा का नाम हमेशा के लिए धन्य हो!” रब्बी सिखाते हैं कि इसका पता कुलपिता जैकब से उनकी मृत्यु शय्या पर चला था। राज्य के संबंध में, रब्बियों ने जो कुछ भी समझा, भावना इतनी प्रबल थी कि उनके द्वारा कहा गया: कोई भी प्रार्थना जिसमें राज्य का कोई उल्लेख नहीं है, वह बिल्कुल भी प्रार्थना नहीं है।

७. परन्तु हमें उस दुष्ट से बचाए रख (मत्ती ६:१३बी सीजेबी)। हमारे अपने शरीर के अलावा, येशुआ प्रलोभन के एक और स्रोत का उल्लेख करता है, जो दुष्ट या शैतान है, जो जीवित और स्वस्थ है, किसी भी संदिग्ध आत्मा को निगलने की कोशिश कर रहा है (अय्यूब १:६-७; जकर्याह ३:१; पहला पतरस ५: ८). हमारी आत्माओं के लिए इस महान आध्यात्मिक युद्ध के बीच, प्रार्थना का यह भाग हमें प्रार्थना करने की याद दिलाता है कि

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 9

प्रभु हमें सुरक्षित रखें। पिता ने हमें अपनी देखभाल के लिए अनाथों के रूप में नहीं छोड़ा है, बल्कि हमारी सुरक्षा के लिए शक्तिशाली आध्यात्मिक कवच प्रदान किया है। जैसे-जैसे हम इस जीवन में आगे बढ़ते हैं, हमारे चारों ओर युद्ध छिड़ जाता है। परिणामस्वरूप, हमें उद्धार का टोप धारण करना चाहिए, धार्मिकता का कवच पहनना चाहिए, और आत्मा की तलवार चलानी चाहिए, जो परमेश्वर का वचन है (इफिसियों ६:१०-१८)। इसमें कोई संदेह नहीं कि यह लड़ाई तीव्र है; हालाँकि, हमें जीत का वादा किया गया है क्योंकि जो आप में है वह उससे जो दुनिया में है उससे बड़ा है (प्रथम यूहन्ना ४:४ सीजेबी)।

सबसे पुरानी और सबसे विश्वसनीय पांडुलिपियों में ये शब्द शामिल नहीं हैं, “क्योंकि राज्य और शक्ति और महिमा सदैव तुम्हारी रहेगी,” इसलिए मैंने उन्हें यहां शामिल नहीं किया है। बहुवचन वाक्यांश. . . हमें दें । . . हमें माफ कर दो । . . हमारा नेतृत्व करें । . . हमें रखो । . . विशिष्ट रूप से यहूदी है, अलग-थलग व्यक्ति के बजाय समूह पर ध्यान केंद्रित करता है। वह हमें किस प्रकार की सुरक्षा प्रदान करता है? राजा दाऊद ने कहा, यहोवा मेरी चट्टान, मेरा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर मेरी चट्टान है, मैं उसी का आश्रय लेता हूं। वह मेरी ढाल और मेरे उद्धार का सींग, और मेरा दृढ़ गढ़ है (भजन १८:२)। अपने लोगों के लिए प्रभु की सुरक्षा असीमित है और यह कई रूप ले सकती है। उन्होंने पाँच सैन्य शब्दों के साथ ईश्वर की देखभाल का वर्णन किया। हाशेम (१) एक चट्टान की तरह है जिसे कोई भी हिला नहीं सकता जो हमें नुकसान पहुंचाएगा; (२) एक किला या सुरक्षा स्थान जहां दुश्मन हमारा पीछा नहीं कर सकता; (३) एक ढाल जो हमारे बीच आती है ताकि कोई हमें नष्ट न कर सके; (४) मोक्ष का सींग, या शक्ति और शक्ति का प्रतीक; और (५) हमारे शत्रुओं से ऊँचा एक गढ़। यदि आपको सुरक्षा की आवश्यकता है, तो येशुआ हा-मेशियाच को देखें।

इसके अलावा, प्रभु की सुरक्षा निश्चित है। ल्यूक ने लिखा: और हर कोई तुमसे नफरत करेगा क्योंकि तुम मेरे हो और मेरे नाम से बुलाए गए हो। परन्तु तुम्हारे सिर का एक भी बाल नष्ट न होगा! क्योंकि यदि तुम दृढ़ रहोगे, तो तुम अपना मन जीत लोगे। (लूका २१:१७-१९ टीएलबी) यीशु ने चेतावनी दी कि आने वाले उत्पीड़न में, उनके परिवार के सदस्य और मित्र उनके अनुयायियों को धोखा देंगे। हर युग के विश्वासियों को इस संभावना का सामना करना पड़ा है। यह जानना आश्वस्त करने वाला है कि जब हम पूरी तरह से परित्यक्त महसूस करते हैं, तब भी रुआच हाकोडेश हमारे साथ रहेगा। वह हमें सांत्वना देगा, हमारी आत्माओं की रक्षा करेगा, और हमें वे शब्द देगा जिनकी हमें आवश्यकता है। यह आश्वासन हमें मसीहा के लिए दृढ़ता से खड़े रहने का साहस और आशा दे सकता है, चाहे परिस्थिति कितनी भी कठिन क्यों न हो।

प्रार्थना पर यह पाठ एक अनुस्मारक के साथ समाप्त होता है जो मत्ती ६:१२ में क्षमा की शिक्षा का अनुसरण करता है। क्षमा के लिए हमारी अपील पर यह हाशेम की अपनी टिप्पणी है। इस अतिरिक्त अंतर्दृष्टि का महत्व पहले से भी अधिक है। यदि आप दूसरे लोगों को क्षमा करते हैं जब वे आपके विरुद्ध पाप करते हैं तो यह सिद्धांत को

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 10

सकारात्मक प्रकाश में लाता है। विश्वासियों को वैसे ही क्षमा करना चाहिए जैसे उन्होंने उससे क्षमा प्राप्त की है (इफिसियों १:७; प्रथम यूहन्ना २:१-२)। मैं इस बात से इंकार नहीं कर रहा हूं कि यह कहना आसान है और करना कठिन है। हालाँकि, जब हृदय ऐसी क्षमा करने वाली भावना से भर जाता है, तो आपका स्वर्गीय पिता भी आपको क्षमा कर देगा (मत्ती ६:१४)। तल्मूड सिखाता है कि जो दूसरों के दोषों के प्रति [गैर-निर्णयात्मक] है, उसके साथ सर्वोच्च न्यायाधीश दयापूर्वक व्यवहार करेगा। जो लोग प्रभु से प्रेम करते हैं वे दूसरों को सचमुच क्षमा करने के अलावा उनकी क्षमा को नहीं जान सकते।

कड़वाहट अपनी ही जेल है. गंदे गुस्से की फर्श पैरों को स्थिर कर देती है। विश्वासघात की दुर्गंध हवा में भर जाती है और आँखों में चुभ जाती है। आत्म-दया का बादल किसी भी पलायन के दृष्टिकोण को अवरुद्ध कर देता है। अंदर आओ और कैदियों को देखो। पीड़ितों को दीवारों से बांध दिया जाता है. विश्वासघात के शिकार. दुर्व्यवहार के शिकार. गहरी और अँधेरी कालकोठरी आपको अंदर जाने के लिए इशारा कर रही है। आपने काफी दुख झेला है. आप चुन सकते हैं, अपने आप को अपनी चोट से बाँधना, या आप चुन सकते हैं कि चोट को नफरत बनने से पहले ही दूर कर देना। परमेश्वर आपके कड़वे हृदय से कैसे निपटता है? वह आपको याद दिलाता है कि आपके पास जो है वह उससे अधिक महत्वपूर्ण है जो आपके पास नहीं है। आपका संबंध यहोवा के साथ है। उसे कोई नहीं ले सकता।

परन्तु यदि आप दूसरों के पापों को क्षमा नहीं करते हैं, तो आपका पिता आपके पापों को दूर नहीं फेंकेगा (मत्ती ६:१५), क्योंकि क्षमा के लिए ग्रीक शब्द (एफ़ीमी) का शाब्दिक अर्थ है फेंकना या फेंकना। यह पिछली कविता की सच्चाई को जोर देने के लिए नकारात्मक तरीके से बताता है। आपके हृदय की भूमि में कड़वाहट की क्षमा न करने वाली जड़ का पाप (इब्रानियों १२:१५) केवल आशीर्वाद को खो देता है और न्याय को आमंत्रित करता है। प्रभु से क्षमा की इच्छा करना, और फिर भी दूसरों को इससे इनकार करना दया का दुरुपयोग है। और दया के बिना न्याय किसी ऐसे व्यक्ति को दिखाया जाएगा जो दयालु नहीं है। न्याय पर दया की विजय होती है (याकूब २:१३)।

यह कहानी इज़राइल में एक पिता और उसके किशोर बेटे के बारे में बताई गई है जिनके बीच बहुत तनावपूर्ण रिश्ता था। नतीजा यह हुआ कि बेटा घर से भाग गया। कुछ समय बाद, पिता ने अपने विद्रोही बेटे की तलाश में यात्रा शुरू की। आख़िरकार, येरुशलायिम में, उसे खोजने के आखिरी हताश प्रयास में, पिता ने अखबार में एक विज्ञापन दिया। विज्ञापन में लिखा था: “प्रिय एरोन, दोपहर को अखबार कार्यालय के सामने मुझसे मिलो। सब माफ है। मैं तुमसे प्यार करता हूं। तुम्हारे पिता।” अगले दिन दोपहर के समय अखबार के कार्यालय के सामने एक हजार “आरोन्स” आये। वे सभी अपने पिता से क्षमा और प्रेम मांग रहे थे।

याकूब हमें बताता है: आपके पास नहीं है क्योंकि आप परमेश्वर से नहीं मांगते। जब

Dp – जब आप प्रार्थना करते हैं, अपने कमरे में जाओ और दरवाज़ा
बंद कर लो मत्ती ६:५-१५ | 11

तुम माँगते हो, तो तुम्हें नहीं मिलता क्योंकि तुम ग़लत इरादों से माँगते हो (याकूब ४:२बी-३ए)। ईश्वर का अपना हिस्सा है, और हमारे प्रार्थना जीवन में हमारा भी अपना हिस्सा है। हमारा हिस्सा लगातार मांगना है, और उसका हिस्सा उसकी इच्छा के अनुसार देना है। भले ही हमें वह प्राप्त न हो जिसके लिए हम प्रार्थना कर रहे हैं, यह हमारे विश्वास को बनाने में मदद करता है। उस समय हमें उस पर विश्वास करने का विश्वास रखना चाहिए, और विश्वास करना चाहिए कि वह जानता है कि हमारे लिए क्या सबसे अच्छा है, भले ही यह उसके विपरीत हो जो हम सोचते हैं कि सबसे अच्छा है। हमें यह विश्वास रखना चाहिए कि प्रार्थना से चीजें बदल जाती हैं। दूसरे शब्दों में, यदि हम प्रार्थना नहीं करते – तो कुछ चीज़ें नहीं बदलेंगी! और यदि आप नियमित रूप से प्रार्थना करते हैं, तो आप सीखेंगे कि प्रार्थना में स्वयं को कैसे अभिव्यक्त करना है।

किसी भी बात की चिन्ता मत करो, परन्तु हर एक बात में प्रार्थना और बिनती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी बिनती परमेश्वर के साम्हने उपस्थित करो। और परमेश्वर की शांति, जो सारी समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे हृदय और तुम्हारे मन की रक्षा करेगी (फिल ४:६-७)।

सर्वशक्तिमान ईश्वर, हमें ईश्वर की शांति प्रदान करें जो सभी समझ से परे हो, कि हम, इस जीवन के तूफानों और परेशानियों के बीच, यह जानते हुए कि सभी चीजें आपके भीतर हैं, आप में आराम कर सकें। हम न केवल आपकी नज़र के नीचे हैं, बल्कि आपकी देखभाल के अधीन हैं, आपकी इच्छा से शासित हैं और आपके प्यार से संरक्षित हैं। शांत हृदय से हम जीवन के तूफानों, बादलों और घने अंधकार को देख सकें, यह जानकर सदैव प्रसन्न रहें कि अंधकार और प्रकाश दोनों आपके लिए समान हैं। अंत तक हमारा मार्गदर्शन, सुरक्षा और शासन करो, ताकि हममें से कोई भी हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से अनन्त जीवन पाने से वंचित न रह जाए। आमीन। रॉबर्ट लुई स्टीवेन्सन द्वारा, १८५०-१८९४।